

सुनिश्चित समय पर अतिथि कवि धर भाये। पहचान, बातचीत, बच्चों की दुनियां में प्रवेश। पेरिस की ज़िन्दगी, हमारी पुरानी इमारत का इतिहास, देश के समाचार। कुछ ही समय बाद हमें ऐसा लगा, जैसे हम जानते हैं एक दूसरे के सालों से।

पहले मैंने बताया बिगड़ा हुआ चित्र। फिर और दूसरे बने हुए। वह भी जिस पर मैंने लिखा था, "हमें स्वामोश रहना सीखना है..."। देर तक वे चित्र देखते रहे बिना प्रश्न पूछे। अब तक तो मैं शान्त हो गया था, इच्छा थी कविता सुनने की। इन्होंने पेश की एक पोथी, जिसमें इन्होंने कुछ लाल और काली स्टाई से अपनी कविताएं लिखी थीं। देर तक हम कविता सुनते रहे। चित्रों ने भी सुख-शान्ति से साथ दिया। खाने के बाद, विदा लेने के पहले मैंने कुछ कविताएं लिख लीं। एक आखरी पंक्ति थी:

"एक दिन बच्चों की बेखौफ हँसी होगी
पिल्लुल
बच्चों की बेखौफ हँसी की तरह"

दूसरे दिन न जाने किस तरह, बड़ी सरलता से चित्र बन गया।

रज़ा -
पेरिस, मई-जून १९८०.